उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग जी.आई.सी. प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2021
हिन्दी
व्याख्या सहित हल प्रश्न पत्र

1. जीवनी–साहित्य से संबंधित कृति 'आवारा मसीहा' इनमें से किस रचनाकार के जीवन पर आधारित है?

(a) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) शरतचन्द्र चटर्जी (d) बंकिमचन्द्र

उत्तर (c) : जीवनी-साहित्य से सम्बन्धित कृति 'आवारा मसीहा' शरत्चन्द्र चटर्जी के जीवन पर आधारित है। विष्णु प्रभाकर कृत 'आवारा मसीहा' प्रसिद्ध बांग्ला साहित्यकार शरत्चन्द्र चटर्जी (शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय) की जीवनी का वर्णन है। सन् 1974 ई. में लिखित यह जीवनी दिशाहारा, दिशा की खोज एवं दिशांत नामक तीन भागों में विभक्त है। हिन्दी की प्रथम जीवनी 'दयानन्द दिग्विजय' (1881 ई.) के लेखक गोपाल शर्मा शास्त्री हैं।

2. निम्नलिखित में से किस साहित्यकार ने 'कुट्टिचातन' नाम से भी कुछ निबंध लिखे हैं?

(a) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(b) डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल
(c) जैनेन्द्र कुमार
(d) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

उत्तर (d) : सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने 'कुट्टिचातन' नाम से भी कुछ निबंध लिखे हैं। 'अज्ञेय' के कई उपनाम हैं। श्री वत्स, कुट्टिचातन, गजानन पंडित, समाजद्रोही नं.1।

अज्ञेय के निबन्ध संग्रह– त्रिशंकु (1945 ई.), सब रंग और कुछ राग (1956 ई.), आत्मनेपद (1960 ई.), आलवाल (1971 ई.), लिखी कागद कोरे (1972 ई.), अद्यतन (1977 ई.), जोग लिखी (1977 ई.), स्त्रोत और सेतु (1978 ई.), युग संधियों पर (1982 ई.), धार और किनारे (1982 ई.), कहाँ है द्वारका (1982 ई.), केन्द्र और परिधि (1984 ई.)।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्ध संग्रह– अशोक के फूल (1948 ई.), मध्यकालीन धर्म साधना (1952 ई.), विचार और वितर्क (1957 ई.), विचार प्रवाह (1959 ई.), कुटज (1964 ई.), साहित्य सहचर (1965 ई.), आलोक पर्व (1972 ई.)।

जैनेन्द्र के निबन्ध संग्रह– प्रस्तुत प्रश्न (1936 ई.), जड़ की बात (1945 ई.), पूर्वोदय (1951 ई.), साहित्य का श्रेय और प्रेय (1953 ई.), मंथन (1953 ई.), सोच विचार (1953 ई.), काम, प्रेम और परिवार (1953 ई.), इतस्ततः (1963 ई.), समय और हम (1964 ई.), परिप्रेक्ष्य (1977 ई.)।

3. निम्नलिखित उपन्यासों को उनके लेखकों के साथ सुमेल कीजिए एवं कूट से सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए–

उपन्यास	लेखक
(क) मैला आँचल	(अ) श्री नरेश मेहता
(ख) यह पथ बंधु था	(ब) शिव प्रसाद सिंह
(ग) गली आगे मुड़ती है	(स) विवेकी राय
(घ) लोकऋण	(द) फणीश्वरनाथ रेणु

कूट–

	क	ख	ग	घ
(a)	ब	स	अ	द
(b)	द	अ	ब	स
(c)	द	ब	अ	स
(d)	अ	द	स	ब

उत्तर (b) : निम्नलिखित उपन्यासों एवं उनके लेखकों के साथ सुमेलन इस प्रकार है–

उपन्यास	प्रकाशन वर्ष	लेखक
मैला आँचल	1954 ई.	फणीश्वरनाथ 'रेणु'
यह पथ बंधु था	1962 ई.	श्री नरेश मेहता
गली आगे मुड़ती है	1974 ई.	शिव प्रसाद सिंह
लोकऋण	1977 ई.	विवेकीराय

4. 'दुर्गा' एकांकी नाटक के रचनाकार हैं–

(a) जगदीशचन्द्र माथुर (b) उपेन्द्रनाथ अश्क
(c) उदयशंकर भट्ट (d) सेठ गोविन्ददास

उत्तर (c) : 'दुर्गा' एकांकी नाटक के रचनाकार उदयशंकर भट्ट हैं। उदयशंकर भट्ट के अन्य एकांकी–एक ही कब्र में, दस हजार, नेता, उन्नीस सौ पैंतीस, वर निर्वाचन, सेठ लाभचन्द, स्त्री का हृदय, बड़े आदमी की मृत्यु, नये मेहमान, पर्दे के पीछे, मुंशी अनोखे लाल, विष की पुड़िया।

जगदीश चन्द्र माथुर के एकांकी – मेरी बाँसुरी, भोर का तारा, कलिंग विजय, रीढ़ की हड्डी, मकड़ी का जाला, खण्डहर, खिड़की राह, घोंसले, कबूतरखाना, ओ मेरे सपने, शारदीय।

उपेन्द्रनाथ अश्क के एकांकी–
लक्ष्मी का स्वागत, पापी, मोहब्बत, जोंक, स्वर्ग की झलक, चरवाहे, देवताओं की छाया में, खिड़की, अंधी गली, पर्दा उठाओःपर्दा गिराओ, कइसा साब कइसी आया।

सेठ गोविन्ददास– स्पर्धा, मानव मन, मैत्री, वह मरा क्यों, हंगर स्ट्राइक, बुद्ध की एक शिष्या, सप्त रश्मि, एकादशी, पंचभूत, चतुष्पथ।

5. 'लक्ष्मीपुरा' इनमें से किस विधा की रचना है?

(a) रिपोर्ताज (b) संस्मरण
(c) व्यंग्य (d) रेखाचित्र

उत्तर (a) : 'लक्ष्मीपुरा' रिपोर्ताज विधा की रचना है। 'किसी लेखक द्वारा किसी भी आयोजन, घटना कलात्मक ढंग से विवरण आँखों देखा रिपोर्ट तैयार करके प्रस्तुतीकरण करना रिपोर्ताज कहलाता है।' 'रिपोर्ताज' फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। गद्य विधा के रूप में इसका आविर्भाव द्वितीय विश्वयुद्ध के आस-पास हुआ। रिपोर्ताज के जनक के रूप में रूसी साहित्यकार इलिया एहरेनवर्ग को स्वीकार किया जाता है। हिन्दी में रिपोर्ताज का जनक शिवदान सिंह चौहान को माना जाता है। 'रुपाभ' पत्रिका के दिसम्बर, 1938 ई. में प्रकाशित 'लक्ष्मीपुरा' को हिन्दी का प्रथम रिपोर्ताज माना जाता है। शिवदान सिंह चौहान के रिपोर्ताज हैं –लक्ष्मीपुरा, मौत के खिलाफ जिंदगी की लड़ाई।

संस्मरण : स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के संबंध में लिखित ग्रंथ या लेख 'संस्मरण' कहलाता है। बालमुकुंद गुप्त का 1907 ई. में 'प्रताप नारायण मिश्र' शीर्षक संस्मरण हिंदी का प्रथम संस्मरण माना जाता है। पुस्तकाकार रूप में हिंदी का प्रथम संस्मरण 'पद्म पराग' (1929 ई.) 'पद्म सिंह शर्मा' को माना जाता है।

6. इनमें से महाकवि कालिदास के जीवन पर आधारित मोहन राकेश की नाट्यकृति है–

(a) लहरों के राजहंस (b) आषाढ़ का एक दिन
(c) आधे-अधूरे (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (b) : महाकवि कालिदास के जीवन पर आधारित मोहन राकेश की नाट्यकृति 'आषाढ़ का एक दिन' है। 'आषाढ़ का एक दिन' (1958 ई.) महाकवि कालिदास के परिवेश, रचना प्रक्रिया, प्रेरणा स्रोत से सम्बद्ध कथा को प्रस्तुत करने वाला नाटक है।
'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के **पुरुष पात्र** - कालिदास, विलोम मातुल, दंतुल।
स्त्री पात्र– अम्बिका, मल्लिका, प्रियंगुमंजरी, रंगिणी, संगिणी।
आधुनिक काल के सशक्त नाटककारों में मोहन राकेश शीर्ष पर हैं। 'लहरों के राजहंस' (1963 ई.) में 'नंद' और 'सुन्दरी' की कथा महात्मा बुद्ध के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत की गई है। 'आधे-अधूरे' (1969 ई.) नाटक मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बना को प्रस्तुत करने वाला एक सशक्त नाटक है, इसके प्रमुख **पुरुष पात्र**– महेन्द्रनाथ, जुनेजा सिंघानिया, अशोक, जगमोहन।
स्त्री पात्र– सावित्री, बिन्नी, किन्नी, हैं।

7. 'कहि न जाय का कहिए' – आत्मकथा के लेखक हैं–

(a) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (b)राम विलाश शर्मा
(c) भगवतीचरण वर्मा (d) विष्णु प्रभाकर

उत्तर (c) : 'कहि न जाय का कहिए' आत्मकथा के लेखक भगवतीचरण वर्मा हैं।
• 'तपती पगडंडियों पर पदयात्रा' (1989 ई.) आत्मकथा के लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं।
• मुँडेर पर सूरज (प्रथम खण्ड), देर सबेर (द्वितीय खण्ड)
आपस की बातें (तृतीय खण्ड) आत्मकथा के लेखक रामविलास शर्मा हैं।
• पंखहीन (प्रथम खण्ड–2004 ई.), मुक्त गगन में (द्वितीय खण्ड-2004 ई.), पंछी उड़ गया (तृतीय खण्ड 2004 ई.) आत्मकथा के लेखक विष्णु प्रभाकर हैं।

8. निम्नलिखित में से राजेन्द्र यादव की संस्मरण–कृति है–

(a) जिनके साथ जिया (b) युगपुरुष
(c) यादों की तीर्थयात्रा (d) औरों के बहाने

उत्तर (d) :

संस्मरणकार	**संस्मरण**
राजेन्द्र यादव	औरों के बहाने (1981 ई.)
	वे देवता नहीं हैं (2000 ई.)
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	युगपुरुष (1983 ई.)
अमृतलाल नागर	जिनके साथ जिया (1981 ई.)
विष्णु प्रभाकर	जाने अनजाने (1962 ई.),
	यादों की तीर्थ यात्रा (1981 ई.)
	मेरे अग्रज मेरे मीत (1983 ई.)
	सृजन के सेतु (1990 ई.)

9. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के किस उपन्यास को 'रैक्व आख्यान' भी कहा जाता है?

(a) पुनर्नवा (b) अनामदास का पोथा
(c) चारुचन्द्र लेख (d) बाणभट्ट की आत्मकथा

उत्तर (b) : डॉ0 हजारीप्रसाद द्विवेदी के 'अनामदास का पोथा' उपन्यास को 'रैक्व आख्यान' भी कहा जाता है। इसमें औपनिषदिक युग के परिवेश एवं जीवन पद्धति का चित्रण है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी-सामाजिक सांस्कृतिक धारा के उपन्यासकार हैं इनके अन्य उपन्यास हैं– चारुचन्द्र लेख (1963 ई.) और पुनर्नवा (1973 ई.), बाणभट्ट की आत्मकथा (1946 ई.) सर्वप्रथम 'विशाल भारत' पत्रिका में प्रकाशित हुआ, यह ऐतिहासिक हिन्दी उपन्यास है। **इसमें तीन प्रमुख पात्र हैं–**बाणभट्ट, भट्टिनी, निपुणिका। इसका विषय वस्तु प्रेम का उदात्तीकरण एवं हर्ष कालीन सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का चित्रण है।

10. रचना – विधा की दृष्टि से 'वोल्गा से गंगा' है–

(a) कहानी (b) नाटक
(c) उपन्यास (d) यात्रावृत्तान्त

उत्तर (a) : रचना-विधा की दृष्टि से 'वोल्गा से गंगा' 'कहानी' है। जिसके रचनाकार राहुल सांस्कृत्यायन हैं। 'वोल्गाा से गंगा' राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखी गई 20 कहानियों का संग्रह है। प्रथम 4 कहानियाँ (निशा, दिवा, अमृताश्व, पुरुहुत) मनुष्य के आदम जीवन से संबंधित है। अगली 4 कहानियों (पुरुधान, अंगिरा, सुदास, प्रवाहण) में वेद, पुराण, महाभारत, उपनिषदों को आधार बनाया गया है। कहानी 'बंधुल मल्ल' (बौद्धकालीन जीवन), नागदत्त (आचार्य चाणक्य के समय से संबंधित कहानी), प्रथा, सुपुर्ण, यौधेय (गुप्तकालीन समय से), दुर्मुख (630 ई. के समय से संबंधित), चक्रपाणि, बाबा नूरदीन, सुरैया, रेखा, भगत, मंगल सिंह, सफदर तथा सुमेर।
राहुल सांकृत्यायन की प्रमुख कहानियाँ–सतमी के बच्चे, वोल्गा से गंगा, बहुरंगी, कनैला की कथा आदि हैं।

11. 'छायावाद का व्यक्ति स्वातन्त्र्य सामन्ती मर्यादाओं के विरुद्ध बहुत बड़ा कदम था।' छायावाद संबंधी यह अभिमत–कथन इनमें से किस आलोचक का है?

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) डॉ. नंददुलारे बाजपेयी
(c) डॉ. नामवर सिंह (d) डॉ. नगेन्द्र

उत्तर (c) : ''छायावाद का व्यक्ति स्वातन्त्र्य सामन्ती मर्यादाओं के विरूद्ध बहुत बड़ा कदम था।'' छायावाद संबंधी यह अभिमत-कथन डॉ. नामवर सिंह का है।
डॉ. नगेन्द्र– ''छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।''
डॉ. नंददुलारे वाजपेयी– ''मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म, किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।''

12. 'धर्मक्षेत्रे–कुरुक्षेत्रे' कहानी के लेखक है–

(a) महीप सिंह (b) कमलेश्वर
(c) हिमांशु जोशी (d) दूधनाथ सिंह

उत्तर (d) : धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे (2002 ई.) कहानी के लेखक दूधनाथ सिंह हैं। इनके अन्य कहानी संग्रह–सपाट चेहरे वाला आदमी (1967 ई.), सुखांत (1971 ई.), पहला कदम (1976 ई.), माई का शोक गीत (1992 ई.), नमो अंधकारः (1998 ई.), निष्कासन (2002 ई.) हैं।

कमलेश्वर के कहानी संग्रह– राजा निरबंसिया (1957 ई.), कस्बे का आदमी (1958 ई.), खोई हुई दिशाएँ (1963 ई.), मांस का दरिया (1966 ई.), आजादी मुबारक (2002 ई.)।
महीप सिंह के कहानी संग्रह– सुबह के फूल (1959 ई.), उजाले के उल्लू (1964 ई.), घिराव (1968 ई.), कुछ और कितना (1973 ई.), दिल्ली कहाँ है (1985 ई.)।
हिमांशु जोशी के कहानी संग्रह– अन्ततः (1965 ई.), रथचक्र (1975 ई.), मनुष्य चिह्न (1976 ई.), जलते हुए डैने (1980 ई.), सागर तट के शहर (2005 ई.)।

13. दलित-विमर्श से सम्बन्धित निम्नलिखित कृतियों को उनके रचनाकारों से सुमेल करके सही उत्तर के विकल्प का चयन कीजिए–

कृतियाँ	रचनाकार
(क) संतप्त	(अ) मोहनदास नैमिशराय
(ख) मणिकर्णिका	(ब) ओमप्रकाश वाल्मीकि
(ग) जूठन	(स) तुलसीराम
(घ) अपने–अपने पिंजरे	(द) सूरजपाल चौहान

कूट–

	क	ख	ग	घ
(a)	अ	द	ब	स
(b)	द	स	ब	अ
(c)	ब	स	अ	द
(d)	द	ब	स	अ

उत्तर (b) : दलित-विमर्श से सम्बन्धित कृतियों एवं उनके रचनाकारों का सही सुमेलन निम्नलिखित है–

कृतियाँ	रचनाकार
संतप्त (2002 ई.)	सूरजपाल सिंह चौहान
मणिकर्णिका (2013 ई.)	तुलसीराम
जूठन (1997 ई.)	ओम प्रकाश वाल्मीकि
अपने-अपने पिंजरे दो भाग में	मोहनदास नैमिशराय (प्रथम भाग 1995 ई.) (द्वितीय भाग 2001 ई.)

14. निम्नलिखित में से लेखक और यात्रा साहित्य से संबंधित उनकी कृति का एक युग्म गलत है, वह है–
(a) निर्मल वर्मा – चीड़ों पर चाँदनी
(b) अज्ञेय – एक बूँद सहसा उछली
(c) धर्मवीर भारती – किन्नर देश में
(d) रामचन्द्र शुक्ल –चिन्तामणि

उत्तर (c) लेखक एवं उनकी कृतियों का सही सुमेल है-

लेखक	यात्रा वृतांत	प्रकाशन वर्ष
अज्ञेय	एक बूँद सहसा उछली	1960 ई.
धर्मवीर भारती	यात्रा चक्र	1955 ई.
निर्मल वर्मा	चीड़ों पर चाँदनी	1964 ई.
रामचंद्र शुक्ल	चिंतामणि (निबंधात्मक ग्रंथ)	1939 ई.
राहुल सांकृत्यायन	किन्नर देश में	1948 ई.

15. इनमें से रेखाचित्रपरक कौन सी कृति महादेवी वर्मा की नहीं है?
(a) बोलती प्रतिमा (b) अतीत के चलचित्र
(c) स्मृति की रेखाएं (d) मेरा परिवार

उत्तर (a) : इनमें से 'बोलती प्रतिमा' रेखाचित्रपरक कृति महादेवी वर्मा की नहीं है। 'बोलती प्रतिमा' (1937 ई.) रेखाचित्र के लेखक श्रीराम शर्मा हैं। शेष विकल्प अतीत के चलचित्र (1941 ई.), स्मृति की रेखाएँ (1943 ई.), मेरा परिवार (1972 ई.) रेखाचित्र की लेखिका महादेवी वर्मा हैं।

16. निम्नलिखित में से उपन्यास और उसमें वर्णित समस्या का एक युग्म सुमेलित नहीं है, वह है–
(a) कर्मभूमि – अछूतोद्धार की समस्या
(b) कायाकल्प – पारलौकिक समस्या
(c) सेवासदन – वेश्याओं की समस्या
(d) गबन – दहेज और अनमेल–विवाह की समस्या

उत्तर (d) : उपन्यास और उसमें वर्णित समस्या का एक युग्म सुमेलित नहीं है, वह है– गबन – दहेज और अनमेल विवाह की समस्या। 'उपन्यास और उसमें वर्णित समस्या का सही सुमेलन निम्नलिखित है–

उपन्यास	प्रकाशन वर्ष	विषय/समस्या	प्रमुख पात्र	उपन्यास श्रेणी
सेवासदन	1918 ई.	वेश्याओं की समस्या	सुमन, शांता	सामाजिक उपन्यास
कायाकल्प	1926 ई.	पारलौकिक/पुनर्जन्म की कथा	चक्रधर अहल्या	राजनीतिक उपन्यास
गबन	1931 ई.	मध्यवर्गीय जीवन की असंगति का यथार्थवादी चित्रण	जालपा, रामनाथ	सामाजिक उपन्यास
कर्मभूमि	1932 ई.	अछूतोद्धार की समस्या	अमरकांत, सकीना	सामाजिक उपन्यास

17. 'विकलांग श्रद्धा का दौर' – इनमें से किस विधा की रचना है?
(a) रिपोर्ताज (b) व्यंग्य
(c) कहानी (d) डायरी

उत्तर (b) : 'विकलांग श्रद्धा का दौर' इनमें से **'व्यंग्य'** विधा की रचना है। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' (1980 ई.) हरिशंकर परसाई जी का व्यंग्यात्मक निबंध है। इस रचना पर इन्हें 1982 ई0 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
हरिशंकर परसाई के व्यंग्यात्मक निबन्ध संग्रह–
पगडंडियों का जमाना (1966 ई.), जैसे उनके दिन फिरे (1963 ई.), सदाचार का ताबीज (1967 ई.), शिकायत मुझे भी है (1970 ई.), ठिठुरता हुआ गणतंत्र (1970 ई.), अपनी-अपनी बीमारी (1972 ई.), वैष्णव की फिसलन (1967 ई.), भूत के पाँव पीछे, सुनो भाई साधो (1983 ई.), तुलसीदास चंदन घिसे (1986 ई.), कहत कबीर (1987 ई.), हँसते हैं रोते हैं, तब की बात और थी, पाखण्ड का अध्यात्म (1998 ई.), आवारा भीड़ के खतरे (1998 ई.), प्रेमचंद के फटे जूते।

18. श्रीलाल शुक्ल के अति प्रसिद्ध उपन्यास 'राग दरबारी' में किस गाँव का चित्रण है?
(a) मीरगंज (b) मेरीगंज
(c) शिवपालगंज (d) गंगौली

उत्तर (c) : श्रीलाल शुक्ल के अति प्रसिद्ध उपन्यास 'राग दरबारी' में शिवपालगंज गाँव का चित्रण है।

- फणीश्वरनाथ 'रेणु' के आंचलिक उपन्यास–'मैला आँचल' (1954 ई.) में –पूर्णिया जिले के 'मेरीगंज' गाँव की कथा है।
- राही मासूम रजा के उपन्यास - 'आधा गाँव' (1966) में – गाजीपुर जिले के 'गंगौली गाँव' के सैयद मुसलमानों की कथा है।

19. 'यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पै धावनो है।' यह काव्य पंक्ति है–

(a) घनानन्द की (b) आलम की
(c) ठाकुर की (d) बोधा की

उत्तर (d) : ''यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पै धावनो है।'' यह काव्य पंक्ति बोधा की है।
रीतिकालीन रीतिमुक्त कवियों की काव्य पंक्तियाँ निम्नवत् हैं–
– ''यों घन आनन्द छावत भावत, जान सजीवन ओर ते आवत।
लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि तो मेरे कवित्त बनावत।।
–घनानन्द की
– ''प्रेम रंग-पगे जगमगे जगे जामिनी के।
जोबन की जोति जगी जोर उमगत है।।''
–आलम की
– ''सेवक सिपाही हम उन राजपूतन को।
दान जुद्ध जुरिबे में नेकु जे न मुरको।।''
–ठाकुर की

20. महादेवी वर्मा के किस काव्यसंग्रह की कविताएँ वैदिक संस्कृत के विभिन्न काव्यांशों पर आधृत हैं?

(a) सप्तपर्णा (b) दीपशिखा
(c) नीरजा (d) सान्ध्यगीत

उत्तर (a) : महादेवी वर्मा के 'सप्तपर्णा' काव्य संग्रह की कविताएँ वैदिक संस्कृत के विभिन्न काव्यांशों पर आधृत है।
'सप्तपर्णा' में महादेवी ने अपनी सांस्कृतिक चेतना के सहारे वेद, रामायण, थेर गाथा, अश्वघोष, कालिदास, भवभूति एवं जयदेव की कृतियों से तादात्म्य स्थापित करके 39 चयनित महत्वपूर्ण अंशो का हिन्दी काव्यानुवाद प्रस्तुत किया।
महादेवी वर्मा की प्रमुख काव्य कृतियाँ–
नीहार (1930 ई.), रश्मि (1932 ई.), नीरजा (1935 ई.), सांध्यगीत (1936 ई.), यामा (1940 ई.), दीपशिखा (1942 ई.), सप्तपर्णा (1960 ई.)।
– महादेवी वर्मा कृत 'सप्तपर्णा' में ऋग्वेद के मंत्रों का हिन्दी काव्यानुवाद संकलित है।
– महादेवी वर्मा कृत 'यामा' में उनके नीहार, रश्मि, नीरजा और सांध्यगीत के महत्वपूर्ण गीतों का संकलन किया गया है। 'यामा' काव्य संग्रह पर महादेवी वर्मा को 1982 ई0 का 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

21. 'अमिय, हलाहल मद भरे, सेत, स्याम, रतनार। जियत, मरत, झुकि – झुकि परत, जेहि चितवत इक बार।।' – कवि 'रसलीन' द्वारा रचित यह दोहा उनकी किस कृति में संगृहीत है?

(a) रस प्रबोध
(b) अंग दर्पण
(c) रस प्रबोध और अंग दर्पण – दोनों में
(d) इनमें से किसी में नहीं

उत्तर (b) : 'अमिय, हलाहल मद भरे, सेत स्याम रतनार।
जियत, मरत, झुकि झुकि परत, जेहि चितवत इक बार।।'
'रसलीन' द्वारा रचित यह पंक्ति उनकी 'अंग दर्पण' कृति में संगृहीत है।
– रसलीन का मूल नाम–सैयद गुलाम नबी था। ये मीर तु फैल अहमद के शिष्य थे।
रसलीन की प्रमुख कृतियाँ निम्न हैं–

ग्रंथ	**वर्ष**	**विषय निरूपण**
अंग दर्पण	1737 ई.	काव्यांगो का उपमा, उत्प्रेक्षा से चमत्कारपूर्ण वर्णन
रस प्रबोध	1741 ई.	1155 दोहे में रसों का वर्णन

22. मिश्र बंधुओं की पुस्तक 'हिन्दी नवरत्न' में इनमें से किस कवि को स्थान नहीं मिला?

(a) मतिराम (b) देव
(c) जायसी (d) सूर

उत्तर (c) : मिश्र बन्धुओं की पुस्तक 'हिन्दी नवरत्न' में 'जायसी' को स्थान नहीं मिला।
मिश्र बंधुओं का 'हिंदी नवरत्न' एक लम्बी भूमिका और नौ अध्यायों में विभाजित है, जिनमें मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक के प्रमुख कवियों को रखा गया है जिनका क्रम इस प्रकार है–
1. गोस्वामी तुलसीदास, 2. महात्मा सूरदास, 3. महाकवि देवदत्त 'देव', 4. महाकवि बिहारीलाल, 5. त्रिपाठी बंधु (महाकवि भूषण, मतिराम), 6. केशवदास, 7. कबीर, 8. चंदबरदाई, 9. भारतेन्दु हरिश्चंद्र।

23. नवगीत विधा से संबंधित काव्यकृति 'दर्द जहां नीला है' के रचनाकार हैं–

(a) वीरेन्द्र मिश्र (b) कुँवर बेचैन
(c) रवीन्द्र भ्रमर (d) शंभुनाथ सिंह

उत्तर (d) : नवगीत विधा से संबंधित काव्यकृति 'दर्द जहाँ नीला है' (1977 ई.) के रचनाकार – शंभुनाथ सिंह हैं।
डॉ. शम्भुनाथ सिंह के अन्य नवगीत संकलन हैं–
रूप रश्मि, छायालोक, मन्वन्तर, उदयाचल (1946 ई.), दिवालोक (1951 ई.), समय की शिला पर (1968 ई.)।
हिन्दी में 'नवगीत' परम्परा का आरम्भ राजेन्द्र प्रसाद सिंह द्वारा सन् 1958 ई. में सम्पादित 'गीतांगिनी' शीर्षक नवगीत संकलन से माना जाता है।
वीरेन्द्र मिश्र के नवगीत संकलन– गीतम, लेखनी-बेला, अविराम चल मधुवन्ति।
कुँवर बेचैन के नवगीत संकलन– पिन बहुत सारे (1972 ई.), शामियाने काँच के (1983 ई.), महावर इन्तजारों का (1983 ई.)।
रवीन्द्र भ्रमर के नवगीत संकलन– रवीन्द्र भ्रमर के गीत (1963 ई.), सोन मछरी मन बसी।

24. ''प्रयोगवाद हिन्दी में बैठे–ठाले का धंधा बनकर आया था। प्रयोक्ताओं के पास न तो काव्य–संबंधी कोई कौशल था और न किसी प्रकार की कथनीय वस्तु थी।'' – यह कथन इनमें से किसका है?

(a) डॉ. नन्ददुलारे वाजपेयी (b) डॉ. नगेन्द्र
(c) डॉ. रामविलास शर्मा (d) डॉ. जगदीश गुप्त

उत्तर (a) : ''प्रयोगवाद हिन्दी में बैठे-ठाले का धंधा बनकर आया था। प्रयोक्ताओं के पास न तो काव्य–संबंधी कोई कौशल था और न किसी प्रकार की कथनीय वस्तु थी।'' यह कथन डॉ. नन्ददुलारे वाजपेयी का है।

डॉ. नगेन्द्र ने– ''प्रयोगवाद को शैलीगत विद्रोह'' कहा है।
डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा– ''प्रयोगवादी कविता में युग से उत्पन्न अनास्था, शंका, घुटन, कुण्ठा, भग्नाशा में से एक पथ के अन्वेषण की व्याकुल भावना दिखाई पड़ती है। ये कवि एक नये मार्ग का अनुसंधान करने के लिए व्याकुल हैं।''

25. 'कृषक – क्रन्दन' इनमें से किसकी काव्यकृति है?
(a) रामनरेश त्रिपाठी (b) रामकुमार वर्मा
(c) गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' (d) मैथिलीशरण गुप्त

उत्तर (c) : 'कृषक-क्रंदन' गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' की काव्यकृति है।
गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' की अन्य काव्य कृतियाँ–
प्रेम-पचीसी, कुसुमांजलि, कृषक क्रन्दन, राष्ट्रीय वीणा, त्रिशूल तरंग, करुणा कादम्बिनी।
रामनरेश त्रिपाठी की काव्य कृतियाँ– मिलन (1918 ई.), पथिक (1920 ई.), मानसी (1927 ई.), स्वप्न (1929 ई.), कविता कौमुदी।
मैथिलीशरण गुप्त की काव्य कृतियाँ– रंग में भंग (1909 ई.), जयद्रथ वध (1910 ई.), भारत-भारती (1912 ई.), किसान (1917 ई.), विकट भट (1929 ई.), साकेत (1931 ई.), यशोधरा (1932 ई.), द्वापर (1936 ई.), जयभारत (1952 ई.), विष्णुप्रिया (1957ई.)।

26. 'हिन्दी नई चाल में ढली' – भारतेन्दु जी की यह पंक्ति उनकी किस रचना से ली गयी है?
(a) भारत-दुर्दशा (b) कालचक्र
(c) अन्धेर नगरी (d) बादशाह – दर्पण

उत्तर (b) : 'हिन्दी नई चाल में ढली' भारतेन्दु जी की यह पंक्ति 1873 ई. में प्रकाशित 'कालचक्र' रचना से ली गयी है। इन्होंने नारद भक्ति सूत्र का तदीय सर्वस्व एवं शांडिल्य भक्ति सूत्र का भक्ति सूत्र वैजयंती शीर्षक से अनुवाद किया।
इनके द्वारा रचित काव्य कृतियाँ– भक्तिसर्वस्व, प्रेम-मालिका, कार्तिक स्नान, वैशाख महात्म्य, प्रेम सरोवर, प्रेम माधुरी।

27. रामचन्द्र शुक्ल का साहित्येतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' नागरी प्रचारिणी सभा' से प्रकाशित 'हिन्दी शब्दसागर' की भूमिका में किस शीर्षक से लिखा गया था?
(a) हिन्दी साहित्य की भूमिका
(b) हिन्दी साहित्य की परम्परा
(c) हिन्दी साहित्य का अतीत
(d) हिन्दी साहित्य का विकास

उत्तर (d) : रामचन्द्र शुक्ल का साहित्येतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' 'नागरी प्रचारिणी सभा' से प्रकाशित 'हिन्दी शब्दसागर' की भूमिका के रूप में 'हिन्दी साहित्य का विकास' शीर्षक से सन् 1929 ई. में प्रकाशित हुआ।
हिन्दी साहित्य की भूमिका (1940 ई.)– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
हिन्दी साहित्य का अतीत (दो भाग)– आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का ग्रंथ है।

28. ''ढेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच,
लोगन कवित्त कीन्हों खेल करि जान्यो है।''
– ये काव्य–पंक्तियाँ किस कवि की हैं?
(a) ठाकुर (b) घनानन्द
(c) भिखारीदास (d) देव

उत्तर (a) : ''ढेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच,
लोगन कवित्त कीन्हों खेल करि जान्यो है।'' ये काव्य पंक्तियाँ रीतिकालीन रीतिमुक्त कवि 'ठाकुर' की हैं।
रामचंद्र शुक्ल ने ठाकुर को 'सच्ची उमंग' का कवि कहा है तो घनानंद को वे 'प्रेम के पीर का कवि' मानते हैं।
देव के संदर्भ में रामचंद्र शुक्ल का कहना है कि–''वे आचार्य और कवि दोनों रूपों में हमारे सामने आते हैं।''
भिखारीदास के संदर्भ में कहते हैं कि ''इनकी रचना कलापक्ष में संयत और भावपक्ष में रंजनकारिणी है।''
– अति सूधो सनेह को मारग है।
जहँ नैकु सयानप बाँक नहीं।। **–(घनानंद)**
– अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस बिरस, उलटी कहत नवीन।। **–(देव)**
– आगे के कवि रीझिहै, तो कविताई न तो।
राधा कन्हाई सुमिरन कौ बहानौ है।। **–(भिखारीदास)**

29. ''वे धर्म में विशिष्टाद्वैतवादी, विचारों में गाँधीवादी और साहित्य में अभिधावादी है।'' –यह कथन मैथिलीशरण गुप्त के विषय में किसने कहा है?
(a) डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त (b) डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. बच्चन सिंह (d) डॉ. रामचन्द्र शुक्ल

उत्तर (c) : ''वे धर्म में विशिष्टाद्वैतवादी, विचारों में गाँधीवादी और साहित्य में अभिधावादी हैं।'' यह कथन मैथिलीशरण गुप्त के विषय में डॉ. बच्चन सिंह ने कहा है।
मैथिलीशरण गुप्त को हिंदी साहित्य जगत में 'दद्दा' नाम से सम्बोधित किया जाता था। इनकी कृति 'भारत भारती' (1912 ई.) के बाद महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि दी।
मैथिलीशरण गुप्त ने 12 वर्ष की अवस्था में ब्रजभाषा में 'कनकलता' नाम से कविता रचना आरम्भ किया।

30. 'मदनाष्टक' इनमें से किसकी रचना है?
(a) नंददास (b) गंग
(c) ध्रुवदास (d) रहीम दास

उत्तर (d) : 'मदनाष्टक' रहीमदास की रचना है।
'मदनाष्टक' संस्कृत और हिन्दी खड़ी बोली की मिश्रित शैली में रचित कृति है। इसका वर्ण्य-विषय 'भगवान श्री कृष्ण' की रासलीला है। इस कृति में 'मालिनी छंद' का प्रयोग किया गया है।
कवि गंग का वास्तविक नाम गंगाधर था। ये अकबर के दरबारी कवि थे। 'गंग पच्चीसी', 'गंग पदावली' तथा 'गंगरत्नावली' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।
रहीमदास की अन्य रचनाएँ– दोहावली या सतसई, बरवै नायिका भेद, नगर शोभा, मदनाष्टक, खेट कौतुकम्, शृंगार सोरठा, रास पंचाध्यायी।
नंददास की रचनाएँ– अनेकार्थ मंजरी, मानमंजरी, सुदामा चरित, रसमंजरी, रूपमंजरी, विरहमंजरी, प्रेमबारह खड़ी, श्यामसगाई, रुक्मिणी मंगल, भँवर गीत, रासपंचाध्यायी, सिद्धांत पंचाध्यायी, दशमस्कंध भाषा।
ध्रुवदास की रचनाएँ– जीवदशा लीला, मन शृंगार लीला, रसविहार लीला।

31. रीतिकालीन कवि 'मतिराम' द्वारा लिखित ग्रन्थ 'ललित ललाम' है –

(a) पिंगल–ग्रंथ (b) रस–निरूपण ग्रंथ
(c) अलंकार–ग्रंथ (d) इनमें से एक भी नहीं

उत्तर (c) : रीतिकालीन कवि 'मतिराम' द्वारा लिखित ग्रंथ 'ललित ललाम' **अलंकार–ग्रंथ** है।

मतिराम के अन्य ग्रन्थ– फूल मंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्य सार, रसराज (रस निरूपक ग्रंथ), अलंकार पंचाशिका (अलंकार निरूपक ग्रंथ), सतसई, वृत्त कौमुदी।

32. निम्नलिखित में से कौन सा काव्य–संग्रह नागार्जुन का नहीं है?

(a) युग की गंगा (b) युग धारा
(c) प्यासी–पथराई आँखें (d) तुमने कहा था

उत्तर (a) : 'युग की गंगा' काव्य-संग्रह नागार्जुन का नहीं है। बल्कि यह रचना 'केदारनाथ अग्रवाल' की है।

केदारनाथ अग्रवाल की अन्य रचनाएँ– नींद के बादल (1947 ई.), लोक और आलोक (1957 ई.), फूल नहीं रंग बोलते हैं (1965 ई.), आग का आईना (1970 ई.), गुलमेंहदी (1978 ई.), पंख और पतवार (1979 ई.), बंबई का रक्त स्नान (1981 ई.), हे मेरी तुम (1981 ई.), मार प्यार की थापे (1981 ई.), बोले बोल अबोल (1985 ई.)।

नागार्जुन की अन्य रचनाएँ– युगधारा (1953 ई.), सतरंगे पंखों वाली (1959 ई.), प्यासी पथराई आँखें (1962 ई.), भस्मांकुर (1971 ई.), तालाब की मछलियाँ (1975 ई.), खिचड़ी विप्लव देखा हमने (1980 ई.), तुमने कहा था (1980 ई.), हजार-हजार बाँहो वाली (1981 ई.), पुरानी जूतियों का कोरस (1983 ई.)।

33. 'गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग' –ये काव्य–पंक्ति इनमें से किस कृति में है?

(a) बीजक (b) गोरख बानी
(c) कवितावली (d) नाथ बानी

उत्तर (c) : ''गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग' –ये काव्य पंक्ति 'कवितावली' ग्रंथ से है इसके रचनाकार तुलसीदास हैं।

- गोरखनाथ की रचनाओं का संकलन और संपादन डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने किया जो 'गोरखबानी' के नाम से प्रकाशित हुआ।
- 'बीजक' संत कबीर की प्रामाणिक कृति है जिसके रमैनी, शब्द, ज्ञान चौतीसा, विप्रमलिसी, कहरा, बसंत, चाचर, बेलि, बिरहुली, हिण्डोला, साखी नामक 11 प्रकरण है।

तुलसीदास की कृतियाँ– वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न (ज्योतिष ग्रंथ), रामलला नहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, कृष्ण-गीतावली, गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, कवितावली।

34. 'सागर मुद्रा' इनमें से किसकी कृति है?

(a) शमशेर बहादुर सिंह
(b) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(c) कुँवर नारायण
(d) हरिनारायण व्यास

उत्तर (b) : 'सागर मुद्रा' (1970 ई.) काव्य कृति सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की है।

'अज्ञेय' के अन्य काव्य-संग्रह– भग्नदूत (1933 ई.), चिंता (1942 ई.), इत्यलम् (1946 ई.), हरी घास पर क्षण भर (1949 ई.), बावरा अहेरी (1954 ई.), इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये (1957 ई.), अरी ओ करुणा प्रभामय (1959 ई.), आँगन के पार द्वार (1961 ई.), पूर्वा (1965 ई.), सुनहले शैवाल (1966 ई.), कितनी नावों में कितनी बार (1967 ई.), क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1969 ई.), सागरमुद्रा (1970 ई.), पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1973 ई.), नदी की बाँक छाया (1981 ई.)।

शमशेर बहादुर सिंह के काव्य-संग्रह– चुका भी हूँ नहीं मैं (1975 ई.), बात बोलेगी (1981 ई.), काल तुझसे होड़ है मेरी (1988 ई.), सुकून की तलाश (1998 ई.)।

कुँवर नारायण के काव्य संग्रह– चक्रव्यूह (1956 ई.), परिवेश : हम तुम (1961 ई.), अपने सामने (1979 ई.), कोई दूसरा नहीं (1993 ई.), इन दिनों (2002 ई.)

प्रबन्धकाव्य– आत्मजयी (1965 ई.), वाजश्रवा के बहाने (2008 ई.)।

हरिनारायण व्यास की प्रमुख रचनायें–1. मृग और तृष्णा, 2. त्रिकोण पर सूर्योदय, 3. बरगद के चिकने पत्ते, 4. आउटर पर रुकी ट्रेन।

35. हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'आदिकाल' के लिए 'आधारकाल' नाम दिया है–

(a) डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल' ने
(b) डॉ. श्यामसुन्दर दास ने
(c) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने
(d) डॉ. मोहन अवस्थी ने

उत्तर (d) : हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'आदिकाल' के लिए 'आधार काल' नाम डॉ. मोहन अवस्थी ने दिया है तथा आदिकाल को 'आधार काल' नाम सुमनराजे ने भी दिया है।

आदिकाल का नामकरण

नाम		**प्रयोक्ता**
चारण काल	–	जार्ज ग्रियर्सन
आरम्भिक काल	–	मिश्र बन्धु
बीजवपन काल	–	आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी
वीरगाथा काल	–	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
सिद्ध सामंत काल	–	पं. राहुल सांकृत्यायन
वीरकाल	–	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
संधिकाल एवं चारण काल	–	डॉ. रामकुमार वर्मा
आदिकाल	–	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
आधार काल	–	सुमनराजे और मोहन अवस्थी
जयकाल	–	रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'।

36. रामकाव्य धारा से संबंधित कृति 'रामध्यानमंजरी' इनमें से किसकी है?

(a) प्राणचन्द चौहान की (b) अग्रदास की
(c) हृदयराम की (d) प्रियादास की

उत्तर (b) : रामकाव्य धारा से संबंधित कृति 'रामध्यानमंजरी' अग्रदास की कृति है।

अग्रदास के अन्य प्रमुख ग्रंथ– हितोपदेश उपखाणा बावनी, ध्यान मंजरी, रामध्यानमंजरी, कुंडलिया, अष्टयाम या रामाष्टयाम।

प्रियादास	–	रसबोधिनी (1769 संवत्)
प्राणचन्द्र	–	रामायण महानाटक (1667 संवत्)
हृदयराम	–	हनुमन्नाटक (1680 संवत्)

37. 'सार सुधानिधि' पत्र के संपादक थे–

(a) पं. सदानंद मिश्र (b) बख्तावर सिंह
(c) पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र (d) रामदास सिंह

उत्तर (a) : 'सार सुधानिधि' पत्र के संपादक **पं. सदानन्द मिश्र** थे। 'सार सुधानिधि' पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 1878 ई. है। यह पत्रिका 'कलकत्ता' से 'साप्ताहिक' रूप में निकलती थी।

→ 'उचित वक्ता' पत्रिका का संपादन- पं. दुर्गा प्रसाद मिश्र ने किया था। यह पत्रिका 1878 ई. में 'साप्ताहिक' रूप में 'कलकत्ता' से निकलती थी।

→ 'आय-दर्पण' पत्रिका का संपादन मुंशी बख्तावर सिंह ने किया था। यह पत्रिका 1877 ई. में शाहजहाँपुर से प्रकाशित होती थी।

38. 'विशाल भारत' पत्र कहाँ से प्रकाशित हुआ था?

(a) दिल्ली (b) जबलपुर
(c) कलकत्ता (d) इलाहाबाद

उत्तर (c) : 'विशाल भारत' पत्र 'कलकत्ता' से प्रकाशित हुआ था। 'विशाल भारत' पत्र के प्रथम संपादक पं. बनारसीदास चतुर्वेदी थे। विशाल भारत एक प्रसिद्ध हिन्दी पत्र था जिसका प्रकाशन सन् 1928 ई. में कलकत्ता से आरम्भ हुआ। इसके संस्थापक रामानन्द चट्टोपाध्याय थे। बनारसीदास जी सन् 1928 ई. से 1937 ई. तक इसका सम्पादन करते रहे।

39. बाबूराव विष्णु पराड़कर इनमें से किस दैनिक पत्र के संपादक रहे?

(a) दैनिक जागरण (b) दैनिक आज
(c) अमर उजाला (d) हिन्दुस्तान

उत्तर (b) : बाबूराव विष्णु पराड़कर **'दैनिक आज'** पत्र के संपादक रहे। 'दैनिक आज' पत्र का प्रकाशन वर्ष 1920 ई. है जो 'दैनिक' के रूप में 'वाराणसी' से निकाला जाता था।

→ 'हिन्दोस्थान' पत्र 'कालाकांकर' से प्रकाशित होता था। इस पत्र को राजा रामपाल सिंह ने सम्पादित किया, यह दैनिक समाचार पत्र था।

→ दैनिक जागरण के प्रथम संस्करण का प्रकाशन सन् 1942 ई. (भारत छोड़ो आंदोलन का समय) में झांसी से जारी किया गया। इसके संस्थापक स्वर्गीय पूर्णचंद्र गुप्त थे। 1947 ई. में इसका मुख्यालय झांसी से कानपुर ले जाया गया।

→ 'अमर उजाला' का प्रकाशन सन् 1948 ई. में डोरीलाल अग्रवाल तथा मुरारीलाल माहेश्वरी ने आगरा से प्रारंभ किया।

→ 'हिंदुस्तान' का प्रकाशन 12 अप्रैल, 1936 ई. को दिल्ली से प्रारंभ हुआ।

40. राजा राममोहन राय का पत्र 'बंगदूत' सर्वप्रथम किस सन् में प्रकाशित हुआ?

(a) सन् 1828 ई. (b) सन् 1832 ई.
(c) सन् 1827 ई. (d) सन् 1829 ई.

उत्तर (d) : राजा राममोहन राय का पत्र **'बंगदूत'** सर्वप्रथम 1829 ई. में प्रकाशित हुआ। बंगदूत 9 मई 1829 ई. में प्रकाशित 'साप्ताहिक' पत्रिका थी जो 'कलकत्ता' से प्रकाशित होती थी।

41. 'तद्भव' पत्रिका के संपादक हैं–

(a) हरे प्रकाश उपाध्याय (b) संजय सहाय
(c) अखिलेश (d) ज्ञानरंजन

उत्तर (c) : 'तद्भव' पत्रिका के संपादक 'अखिलेश' हैं। समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य के एक प्रमुख हस्ताक्षर 'अखिलेश' ने इस पत्रिका का प्रकाशन मार्च, 1999 ई. से प्रारंभ किया। इसका प्रकाशन लखनऊ, उत्तर-प्रदेश से होता है। यह एक 'त्रैमासिक' साहित्यिक पत्रिका है।

→ 'पहल' पत्रिका का सम्पादन 'ज्ञानरंजन' करते थे। इस पत्रिका का प्रकाशनारंभ 1960 ई. में 'जयपुर' से हुआ, यह त्रैमासिक पत्रिका थी।

**42. 'मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढ़ितोऽथ प्रयोजनात् ।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया॥'
इस कथन के आचार्य हैं–**

(a) कुन्तक (b) आनन्दवर्धन
(c) विश्वनाथ (d) मम्मट

उत्तर (d) : 'मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात् ।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।''
इस कथन के आचार्य मम्मट हैं।

– जहाँ मुख्यार्थ में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ के साथ अन्विति में व्यवधान हो, वहाँ रूढ़िगत अथवा विशेष प्रयोजन के प्रतिपादन के लिए मुख्यार्थ से सम्बद्ध किसी अन्य अर्थ की प्रतीति हो उसे लक्ष्यार्थ कहते हैं। शब्द की वह शक्ति जिसमें रूढ़ि अथवा प्रयोजनवश शब्द का मुख्यार्थ बाधित होता है किन्तु उसी से सम्बद्ध अन्य अर्थ प्रकाशित होता है, लक्षणा कहलाती है।
– कुन्तक अभिधावादी आचार्य थे। इनकी एकमात्र रचना 'वक्रोक्ति जीवितम्' जो अधूरी ही उपलब्ध है।
– आनन्दवर्द्धन 'ध्वनि संप्रदाय' के प्रवर्तक आचार्य थे। इनकी कृति 'ध्वन्यालोक' प्रसिद्ध है।

**43. 'मूलन ही की जहाँ अधोगति केशव गाइय।
होम हुतासन धूम नगर एकै मलिनाइय॥' इन काव्य–पंक्तियों में अलंकार है–**

(a) परिसंख्या (b) असंगति
(c) प्रतीप (d) विभावना

उत्तर (a) : 'मूलन ही की जहाँ अधोगति केशव गाइय।
होम हुतासन धूम नगर एकै मलिनाइय।।'
इन काव्य पंक्तियों में परिसंख्या अलंकार है।

परिसंख्या अलंकार– अन्यत्र सम्भव वस्तु को निषेध करके एक स्थान विशेष पर उसके नियमन को परिसंख्या अलंकार कहा जाता है।

अथवा

किसी वस्तु के गुणादि को उस वस्तु के अन्य स्थानों से हटाकर एक ही स्थान पर प्रतिस्थापित कर देना परिसंख्या अलंकार है।
जयदेव कहते हैं–
'परिसंख्या निषिध्यैकमन्यस्मिन् वस्तुयंत्रणम् ।
–(चन्द्रालोक) से।
अर्थात् एक पदार्थ का एक स्थान से अन्य स्थान पर उसे स्थित दिखलाने में परिसंख्या है।

असंगति अलंकार– इसमें कारण का होना कहीं और कार्य का होना कहीं वर्णित होता है।

उदाहरण– पलनि पीक अंजन अधर, धरे महावर भाल।
आज मिले सु भली करी, भले बने ही लाल।

विभावना अलंकार– कारण और कार्य के सम्बन्ध में चमत्कारपूर्ण कल्पना अर्थात् कारण के अभाव में कार्य की उत्पत्ति का वर्णन, विभावना अलंकार है।

जैसे- 'बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।'
यहाँ कारण (पैर और कान) के अभाव में चलना और सुनना कहा गया है। अतः विभावना अलंकार है।
प्रतीप अलंकार–प्रतीप का अर्थ है– उल्टा/विपरीत।
इस प्रकार जहाँ बड़े/उच्च को छोटा और छोट को बड़ा बताया जाता है, अर्थात् जब उपमेय को उपमान और उपमान को उपमेय बना दिया जाता है, तब वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। यह 'उपमा अलंकार' का उल्टा होता है क्योंकि इस अलंकार में उपमान को लज्जित, पराजित या नीचा दिखाया जाता है और उपमेय को श्रेष्ठ बताया जाता है।
उदाहरण : 'सिय मुख समता किमि करै चंद वापुरो रंक।'

44. दिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित हो चला
तरु शिखा पर थी अब राजती
कमलिनी–कुल–वल्लभ की प्रभा
इस कविता में छन्द है –
(a) वंशस्थ (b) द्रुतविलम्बित
(c) दुर्मिल (d) वसन्ततिलका

उत्तर (b) :
दिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु शिखा पर थी अवराजती
कमलिनी कुल वल्लभ की प्रभा।
इस कविता में 'द्रुतविलम्बित' छंद है।
द्रुतविलम्बित– इसका दूसरा नाम 'सुन्दरी' भी है। इसमें 12 वर्ण इन गणों के क्रम में रहते हैं–
नगण, भगण, भगण, रगण।
सूत्र– [न भ भ र –द्रुत]
इस प्रकार गणों तथा 12 अक्षरों के कारण द्रुतविलम्बित छन्द है। यह समवर्णिक छंद है।
वंशस्थ– यह समवर्णिक छंद है, इसका पूरा नाम 'वंशस्थ विलम्' है। इसमें 12 वर्ण एवं जगण, तगण, जगण, रगण होता है।
सगर्ण बोला तब कर्ण भूप से, = 12 वर्ण
अमान्य बोला तब कर्ण भूप से,
परास्त होना रण पूर्ण शत्रु से,
विचार्य है केवल वृद्ध बुद्धि से।
दुर्मिल छंद : दुर्मिल सवैया छंद का दूसरा नाम 'चंद्रकला' है। दुर्मिल छंद के प्रत्येक चरण में 24 वर्ण होते है। इसमें 4 चरण होते हैं। दुर्मिल छंद में 12-12 वर्ण पर यति होती है। इसमें 8 सगण (।।ऽ) होते हैं।
उदाहरण :
सखि नील-नभस्सर में उतरा, यह हंस अहा तरता तरता।
अब तारक-मौक्तिक शेष नहीं, निकला जिनको चरता चरता।
अपने हिम-बिन्दु बचे तब भी, चलता उनको धरता धरता।
गड़ जाय न कंटक भूतल के, कर डाल रहा डरता डरता।
वसंततिलका छंद–वसंततिलका एक वर्णिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 14 वर्ण होते हैं एवं 14वें वर्ण पर यति होती है। वसंततिलका छंद में तगण (ऽऽ।), भगण (ऽ।।), जगण (।ऽ।), जगण (।ऽ।) और 2 गुरू (ऽऽ) होता है।
''उक्ता वसंततिलका तभजाः जगौ गः।''

उदाहरण :
मै पुण्य भारत धरा पर जन्म लेऊँ।
संस्कार वैदिक मिले सब देव सेऊँ।।
यज्ञोपवीत रखके नित नेम पालूँ।
माथे लगा तिलक मैं रख गर्व चाखूँ।।

45. 'सगुन अलंकारन सहित दोषरहित जो होइ।
शब्द अर्थ वारो कवित बिबुध कहत सब कोइ॥' – काव्य की यह परिभाषा इनमें से किस आचार्य ने दी है?
(a) कुलपति मिश्र (b) भिखारीदास
(c) चिन्तामणि (d) श्रीपति

उत्तर (c) : ''सगुन अलंकारन सहित, दोषरहित जो होइ।
शब्द अर्थ वारो कवित बिबुध कहत सब कोइ।।''
काव्य की यह परिभाषा आचार्य चिन्तामणि ने दी है।
आचार्य चिन्तामणि ने काव्य का उक्त लक्षण अपने ग्रंथ 'कवि कुलकल्पतरू' में दिया है।
कुलपति मिश्र का कथन–
''दोष रहित अरु गुन सहित, कछुक अल्प अलंकार।
सबद अरथ सो कवित है, ताको करो विचार।।''
भिखारीदास का कथन–
''रस कविता को अंग, भूषन हैं भूषन सकल।
गुन सरूप और रंग, दूशन करै करुपता।।''
श्रीपति का कथन–
''यदपि दोष बिनु गुन सहित, अलंकार सों लीन।
कविता बनिता छवि नहीं, रस बिन तदपि प्रवीन।।''

46. भरत के रस-सूत्र में निहित 'संयोग' का अर्थ 'भोज्य – भोजक भाव' निष्पत्ति' का अर्थ 'भुक्ति' (आस्वाद) की स्थापना किस व्याख्याकार ने की है?
(a) भट्ट लोल्लट (b) श्री शंकुक
(c) अभिनवगुप्त (d) भट्ट नायक

उत्तर (d) : भरत के रस-सूत्र में निहित संयोग का अर्थ 'भोज्य–भोजक भाव' तथा 'निष्पत्ति' का अर्थ 'भुक्ति' (आस्वाद) की स्थापना व्याख्याकार भट्टनायक ने की है।
→ भरतमुनि के रस-सूत्र में आए संयोग एवं निष्पत्ति शब्द के अर्थ, रस की अवस्थिति के सम्बन्ध में परवर्ती आचार्यों का मत निम्न है–

आचार्य	संयोग	निष्पत्ति	रस की अवस्थिति
भट्ट-लोल्लट	उत्पाद्य–उत्पादक	उत्पत्ति	अनुकार्य (राम) में
शंकुक	अनुमाप्य–अनुमापक	अनुमिति	अनुकर्ता (नट) में
भट्टनायक	भोज्य–भोजक	भुक्ति	प्रेक्षक (दर्शक) में
अभिनव-गुप्त	व्यंग्य-व्यंजक	अभिव्यक्ति	सामाजिक (सहृदय) में

→ रस को 'ब्रह्मानन्द सहोदर' सर्वप्रथम भट्टनायक ने कहा।

47. 'शब्दार्थो ते शरीरं रस आत्मा'– यह कथन इनमें से किसका है?
(a) भरतमुनि (b) राजशेखर
(c) विश्वनाथ (d) भामह

उत्तर (b) : 'शब्दार्थो ते शरीर आत्मा' यह कथन **राजशेखर** का है।
राजशेखर का अन्य कथन है–
''शब्दार्थयोर्ययावत् सहभावेन विधा साहित्यविधा।''
भामह ने काव्य की परिभाषा दी–
''शब्दार्थो सहितौ काव्यम्।''
आचार्य विश्वनाथ ने काव्य की परिभाषा दी–
''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।''

48. उच्चारण–स्थान की दृष्टि से हिन्दी के 'अ' और 'आ' स्वर हैं–
(a) तालव्य (b) मूर्धन्य
(c) ओष्ठ्य (d) कण्ठ्य

उत्तर (d) : उच्चारण स्थान की दृष्टि से हिन्दी के 'अ' और 'आ' 'कण्ठ्य' स्वर हैं।
कण्ठ्य – अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह, अः
तालव्य – इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श
मूर्धन्य – ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष
दन्त्य – ल, त, थ, द, ध, न, स
ओष्ठ्य– उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म
मूल स्वर– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ
संयुक्त स्वर– ए, ओ, ऐ, औ

49. केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने हिन्दी की मानक वर्णमाला में मूलतः कितनी स्वर और कितनी व्यंजन–ध्वनियों को स्थान दिया है?
(a) 12 और 36 (b) 12 और 35
(c) 11 और 35 (d) 11 और 36

उत्तर (c) : केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने हिन्दी की मानक वर्णमाला में मूलतः 11 स्वर और 35 व्यंजन-ध्वनियों को स्थान दिया है।
वर्ण भाषा की ध्वनियों के उच्चरित तथा लिखित दोनों रूपों के प्रतीक हैं। लिपि-चिह्न भाषा के लिखित रूप के प्रतीक होते हैं। इस दृष्टि से लिपि-चिह्न वर्ण के अंतर्गत आते हैं। इन वर्णों के क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं।
'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' द्वारा विद्वानों के विचार-विमर्श के पश्चात् हिन्दी वर्णमाला तथा अंकों का अद्यतन मानक स्वरूप निर्धारित किया गया है जो इस प्रकार है–
स्वर– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
संस्कृत के लिए प्रयुक्त देवनागरी में ॠ, ऌ तथा ॡ भी सम्मिलित है, किन्तु हिन्दी में इनका प्रयोग न होने के कारण इन्हें हिन्दी की मानक वर्णमाला में स्थान नहीं दिया गया है।
मूल व्यंजन–
क, ख, ग, घ, ङ
च, छ, ज, झ, ञ
ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़
त, थ, द, ध, न
प, फ, ब, भ, म
य, र, ल, व
श, ष, स, ह
ड़ और ढ़ व्यंजन रूप हिन्दी में एकीकृत ध्वनियाँ है। इस तरह हिंदी वर्णमाला में मूलतः 11 स्वर तथा 35 (33+2) व्यंजन हैं।

50. 'अचार' शब्द इनमें से किस भाषा से आया है?
(a) अंग्रेजी (b) पुर्तगाली
(c) फ्रेंच (d) डच

उत्तर (b) : 'अचार' शब्द पुर्तगाली भाषा से आया है।
अन्य पुर्तगाली शब्द– तम्बाकू, अनन्नास, आलपीन, आलमारी, काजू, किरानी, गमला, परात, पिस्तौल, पपीता, कमीज, कमरा, तौलिया, बाल्टी, चाबी, गोभी, इस्पात।
अंग्रेजी शब्द– कोर्ट, डॉक्टर, नर्स, पेन्सिल, स्कूल, कॉलेज, मजिस्ट्रेट, आपरेशन, टेलीफोन, टिकट, कालरा, वोट।
डच शब्द– तुरूप, बम
फ्रेंच शब्द– कारतूस, रिपोर्ताज, अँग्रेज, कूपन, फ्रांसीसी, पुलिस।

51. 'पश्चिमी हिन्दी' की उत्पत्ति इनमें से किस अपभ्रंश से हुई है?
(a) शौरसेनी (b) पैशाची
(c) मागधी (d) अर्द्धमागधी

उत्तर (a) : 'पश्चिमी हिन्दी' की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से हुई है।
भोलानाथ तिवारी ने क्षेत्रीय तथा सम्बद्ध अपभ्रंशों के आधार पर अपना वर्गीकरण निम्न ढंग से प्रस्तुत किया है–

अपभ्रंश		**आधुनिक भाषाएँ**
शौरसेनी (मध्यवर्ती)	–	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती।
मागधी (पूर्वीय)	–	बिहारी, बंगाली, उड़िया, असमिया।
अर्धमागधी (मध्य पूर्वीय)	–	पूर्वी हिन्दी
महाराष्ट्री (दक्षिणी)	–	मराठी
ब्राचड़	–	सिन्धी
पैशाची (पश्चिमोत्तरी)	–	लँहदा, पंजाबी

52. ''एक भाषा के अन्तर्गत जब कई अलग-अलग रूप विकसित हो जाते हैं, तो उन्हें 'बोली' कहते हैं।'' –यह कथन किसका है?
(a) जॉर्ज ग्रियर्सन (b) डॉ. श्यामसुन्दर दास
(c) आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा (d) डॉ. भोलानाथ तिवारी

उत्तर (d) : ''एक भाषा के अन्तर्गत जब कई अलग-अलग रूप विकसित हो जाते हैं, तो उन्हें 'बोली' कहते हैं।'' यह कथन डॉ. भोलानाथ तिवारी का है।
किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली स्थानीय भाषा को बोली कहते हैं। **जैसे–** अवधी, ब्रजभाषा, मगही, बुन्देली आदि। राष्ट्रीय भाषा किसी राष्ट्र की भाषा होती है जबकि राजभाषा द्वारा सरकार तथा सरकारी कार्यालयों में कार्य किया जाता है।
डॉ. श्यामसुन्दर दास के अनुसार– ''मनुष्य और मनुष्यों के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।''

53. निम्नलिखित में से पूर्वी हिन्दी की बोली नहीं है–
(a) अवधी (b) बघेली
(c) ब्रजभाषा (d) छत्तीसगढ़ी

उत्तर (c) : निम्न में से पूर्वी हिन्दी की बोली ब्रजभाषा नहीं है- 'ब्रजभाषा' पश्चिमी हिन्दी की बोली है।

अपभ्रंश	आधुनिक भाषाएँ	बोलियाँ
शौरसेनी	पश्चिमी हिन्दी	ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी, कौरवी या खड़ी बोली, बाँगरू या हरियाणवी।
	राजस्थानी हिन्दी	मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मालवी।

मागधी	बिहारी	भोजपुरी, मगही, मैथिली
अर्द्धमागधी	पूर्वी हिन्दी	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी

54. ''तुम वहन कर सको जन – मन में मेरे विचार, वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार।'' –ये पंक्तियाँ सुमित्रानंदन पन्त की किस कृति से उद्धृत की गयी हैं?

(a) युगांत (b) ग्राम्या
(c) गुंजन (d) स्वर्णधूलि

उत्तर (b) : ''तुम वहन कर सको जन-मन में मेरे विचार, वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार।'' ये पंक्तियाँ सुमित्रानंदन पंत की 'ग्राम्या' कृति से उद्धृत की गयी हैं।

सुमित्रानन्दन पंत के काव्य को विद्वानों ने चार चरणों में बाँटा है जो निम्न है–

छायावादी– उच्छ्वास (1920 ई.), ग्रंथि (1920 ई.), वीणा (1927 ई.), पल्लव (1928 ई.), गुंजन (1932 ई.)।

प्रगतिवादी– युगान्त (1936 ई.), युगवाणी (1939 ई.), ग्राम्या (1940 ई.)।

अन्तश्चेतनावादी– स्वर्ण किरण (1947 ई.), स्वर्ण धूलि (1947 ई.), युगपथ (1949 ई.)।

नवमानवतावादी– उत्तरा (1949 ई.), चिदम्बरा (1958), कला और बूढ़ा चाँद (1959 ई.), अतिमा (1955 ई.), लोकायतन (1964 ई.), सत्यकाम (1975)।

55. इनमें से संस्कृत भाषा की दृष्टि से कौन सा शब्द-समूह शुद्ध है?

(a) विद्युत, परिषद्, विद्वान, पृथक
(b) विद्युत, परिषद्, विद्वान्, पृथक्
(c) विद्युत्, परिषद्, विद्वान्, पृथक
(d) विद्युत्, परिषद्, विद्वान्, पृथक्

उत्तर (d) : संस्कृत भाषा की दृष्टि से शुद्ध शब्द समूह है– विद्युत्, परिषद्, विद्वान्, पृथक्।

56. 'यशोदा' शब्द में कौन-सी संधि है?

(a) विसर्ग सन्धि (b) गुण सन्धि
(c) यण सन्धि (d) व्यंजन सन्धि

उत्तर (a) : 'यशोदा' में विसर्ग सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद यशः+दा = यशोदा होगा। विसर्ग तथा व्यंजन या स्वर के परस्पर मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं। यदि प्रथम पद के अंत में 'अ' स्वर के बाद विसर्ग आये तथा दूसरे पद के प्रारंभ में किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग के स्थान पर 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुण सन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है।
जैसे– सरः + वर = सरोवर

57. 'मुट्ठी गरम करना' मुहावरे का सही अर्थ है–

(a) आग से तापना (b) बहुत अधिक पीटना
(c) घूस देना (d) बहुत सस्ता होना

उत्तर (c) : 'मुट्ठी गरम करना' मुहावरे का सही अर्थ है– घूस देना।
मुहावरा– ऐसा वाक्यांश जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये, 'मुहावरा' कहलाता है।
(डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद)

''मुहावरा भाषा विशेष में प्रचलित उस अभिव्यक्त इकाई को कहते हैं जिसका प्रयोग प्रत्यक्षार्थ से अलग रूढ़ि लक्ष्यार्थ के लिए किया जाता है।''
–(डॉ. भोलानाथ तिवारी)

मुहावरा		**अर्थ**
बरस पड़ना	–	क्रुद्ध होकर डाँटना
आग में घी डालना	–	क्रोध भड़काना/उकसाना
अण्डे सेना	–	घर में बेकार बैठना
गुदड़ी का लाल	–	साधारण वस्तु में अनमोल पदार्थ का छिपा रहना
घड़ो पानी पड़ना	–	अत्यन्त लज्जित होना

58. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है–

(a) यह असली गाय का घी है।
(b) यहाँ शत्रु से खतरा है।
(c) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा पकड़ा गया।
(d) इस प्रकार यहाँ अनेक प्रकार के आविष्कार हुए।

उत्तर (b) : निम्न में से शुद्ध वाक्य है– यहाँ शत्रु से खतरा है।
शेष अन्य वाक्य अशुद्ध है जैसे–
यह असली गाय का घी है। –अशुद्ध
यह गाय का असली घी है। –शुद्ध

59. 'मैंने आम खाया है।' –यह वाक्य किस काल को प्रदर्शित करता है?

(a) भूतकाल (b) वर्तमान काल
(c) भविष्य काल (d) इनमें से किसी को नहीं

उत्तर (a) : 'मैने आम खाया है।' यह वाक्य भूतकाल को प्रदर्शित करता है। यह आसन्न भूतकाल का उदाहरण है। क्रिया के उस रूपान्तरण को 'काल' कहते हैं, जिससे उसके कार्य व्यापार का समय और उसकी अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध हो। काल तीन प्रकार के होते हैं–

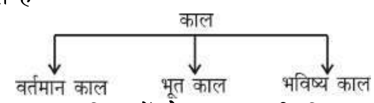

1. वर्तमान काल– क्रियाओं के व्यापार की निरन्तरता को 'वर्तमान काल' कहते हैं। इसमें क्रिया का आरम्भ हो चुका होता है। जैसे–वह पढ़ती है। यहाँ 'पढ़ने' का कार्य व्यापार चल रहा है, समाप्त नहीं हुआ। वर्तमान काल के पाँच भेद होते हैं–

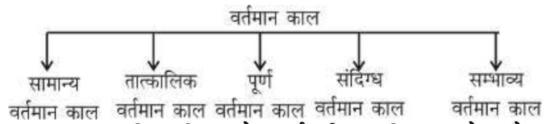

2. भूत काल– जिस क्रिया से कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं, जैसे– कुसुम घर गयी। इसके 6 भेद होते हैं।

भूतकाल के भेदः
सामान्य भूतकाल, आसन्न भूतकाल, पूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, संदिग्ध भूतकाल, हेतु-हेतुमद् भूतकाल।

3. भविष्य काल– क्रिया का वह रूप जिससे आने वाले समय में कार्य के होने का बोध हो, भविष्य काल कहलाता है।
भविष्य काल के तीन भेद होते हैं–

60. निम्नलिखित में से किस शब्द में उपसर्ग नहीं लगा है?
(a) नपुंसक (b) समालोचना
(c) अतिशय (d) दर्शन

उत्तर (d) : निम्न में दर्शन शब्द में उपसर्ग नहीं लगा है।
शेष विकल्पों में उपसर्ग लगा है।
उपसर्ग – 'उपसर्ग' उस शब्दांश या अव्यय को कहते हैं, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है।
उपसर्ग = उप (समीप) + सर्ग (सृष्टि करना) का अर्थ है– किसी शब्द के समीप आकर नया शब्द बनाना।
संस्कृत, हिन्दी और उर्दू भाषा से प्राप्त उपसर्गों की संख्या इस तरह निश्चित की गई है जो क्रमशः 19, 10, 12 है।
अतिशय में 'अति' उपसर्ग है। समालोचना में 'सम' उपसर्ग है। नपुंसक में 'न' उपसर्ग है।

61. इनमें से व्यक्तिवाचक संज्ञा नहीं है–
(a) त्रिपिटक (b) भारत
(c) लेखक (d) गंगा

उत्तर (c) : इनमें से 'लेखक' व्यक्तिवाचक संज्ञा नहीं है। बल्कि जातिवाचक संज्ञा है। त्रिपिटक, भारत, गंगा ये सभी व्यक्तिवाचक संज्ञा है।
संज्ञा– किसी जाति, द्रव्य, गुण, भाव, व्यक्ति, स्थान और क्रिया आदि के नाम को संज्ञा कहते है।
व्यक्तिवाचक संज्ञा– जिस शब्द से किसी एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक 'संज्ञा' कहते है। जैसे– राम, काशी, त्रिपिटक, भारत, गंगा, लखनऊ, संध्या, प्रशांत महासागर, हिमालय, रक्षाबंधन, दीवाली इत्यादि।
जातिवाचक संज्ञा– जिस संज्ञा से किसी जाति के सम्पूर्ण पदार्थों व उनके समूहों का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे– मनुष्य, नदी, लेखक, पहाड़, सभा, गाय, तोता, भूकम्प, वर्षा, तूफान, प्रोफेसर, कुर्सी, मकान, घड़ी, टेबल इत्यादि।

62. 'पंडित' का पर्यायवाची शब्द नहीं है–
(a) कोविद (b) दामिनी
(c) बुध (d) प्राज्ञ

उत्तर (b) : 'पंडित' का पर्यायवाची शब्द 'दामिनी' नहीं है। 'दामिनी' बिजली का पर्यायवाची शब्द है।
बिजली के अन्य पर्यायवाची शब्द– चपला, विद्युत, चंचला, सौदामिनी, तड़ित, दामिनी, घनवल्ली, बीजुरी, क्षणप्रभा।
पण्डित के पर्यायवाची शब्द– विद्वान, विचरण, बुध, प्राज्ञ, सुधी, कोविद, सुविज्ञ, ज्ञानी, धीर, मनीषी।

63. निम्नलिखित में से सामासिक शब्द और समास के नाम का एक युग्म गलत है, वह है–
(a) उपकृष्णम् – तत्पुरुष (b) महादेव – कर्मधारय
(c) पुष्पधन्वा – बहुव्रीहि (d) शुकबकम् – द्वन्द्व

उत्तर (a) : निम्न में से सामासिक शब्द और समास के नाम का एक युग्म गलत है, वह है– उपकृष्णम् – तत्पुरुष। जबकि उपकृष्णम् में 'अव्ययीभाव समास' है। इसका समास विग्रह–कृष्णस्य समीपम् = उपकृष्णम् (समीप अर्थ में 'उप' अव्यय)
–अव्ययीभाव समास में प्रथम पद अव्यय एवं पूर्व पद की प्रधानता हो और समस्त पद अव्यय की भाँति कार्य करता है। अव्ययीभाव समास कहलाता है। इस समास का पहला पद-आ, अनु, यथा, प्रति, भर, उप, यावत आदि से प्रारम्भ होता है। जैसे–यथाशक्ति, प्रतिदिन, उपगंगम्, उपकृष्णम्, भरपेट। शेष अन्य विकल्प महादेव-कर्मधारय, पुष्पधन्वा–बहुव्रीहि, शुकबकम् –द्वन्द्व समास होगा।

64. 'लड़के ने रमेश को मारा।' –इस वाक्य में 'लड़के' है–
(a) एकवचन (b) बहुवचन
(c) द्विवचन (d) एकवचन तथा बहुवचन दोनों

उत्तर (a) : 'लड़के ने रमेश को मारा।' इस वाक्य में 'लड़के' एकवचन है। हिन्दी में केवल दो वचन होते हैं– एकवचन और बहुवचन। जबकि संस्कृत में तीन वचन होते हैं–एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। हिन्दी में दो या दो से अधिक संख्याओं के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।
संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से एक या एक से अधिक संख्या का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं।
जाति के अर्थ में एकवचन का प्रयोग किया जाता है।

65. इनमें से 'सफल' शब्द का विलोम नहीं है–
(a) असफल (b) विफल
(c) कुफल (d) निष्फल

उत्तर (c) : इनमें से 'सफल' शब्द का विलोम नहीं है–कुफल। जबकि सफल का सही विलोम– असफल, विफल और निष्फल है। संसार परस्पर विरोधी वस्तुओं, दशाओं, विचारों, गुणों, अवयवों से भरा पड़ा है। जहाँ प्रत्येक का अस्तित्व उसमें निहित गुणों के कारण है, वहीं उनका महत्त्व उनके सापेक्ष विरोधी गुणों के कारण।

66. यौगिक शब्दों की रचना के आधार हैं–
(a) उपसर्ग एवं प्रत्यय
(b) उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि और समास
(c) सन्धि एवं समास
(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (b) : यौगिक शब्दों की रचना के आधार हैं– उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास।
यौगिक शब्द– हिन्दी के ऐसे शब्द जो दो शब्दों या शब्द खंडो से मिलकर (योग होकर) बनते हैं। इनके अलग-अलग खण्डों का भी अपना अर्थ होता है किंतु आपस में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं या अर्थ के मूल्य को बढ़ा देते हैं। यौगिक शब्दों की रचना प्रायः रूढ़ शब्दों के आदि (प्रारंभ) या अंत के शब्दांशों के जुड़ने से होती है। यौगिक का अर्थ है जुड़ा हुआ। जब किसी रूढ़ शब्द के साथ कोई अर्थवान शब्द या शब्द खण्ड (उपसर्ग व प्रत्यय) जुड़ता है तो वह यौगिक शब्द बन जाता है।

67. 'अयोग्य के पास अच्छी वस्तु' –इनमें से किस लोकोक्ति के लिए सटीक अर्थ है–
(a) छठी का दूध याद आना
(b) जिसकी लाठी उसकी भैंस
(c) चौबे गये छब्बे होने, दूबे बनकर आये
(d) छछूँदर के सिर में चमेली का तेल

उत्तर (d) : 'अयोग्य के पास अच्छी वस्तु' लोकोक्ति के लिए सटीक अर्थ है– छछूँदर के सिर में चमेली का तेल।
लोकोक्ति– लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना होती है। उससे निकली बात बाद में लोगों की जुबान पर चल निकलती है, तब 'लोकोक्ति' हो जाती है।

लोकोक्ति	**अर्थ**
जिसकी लाठी उसकी भैंस	शक्तिशाली व्यक्ति की ही विजय होती है।
छठी का दूध याद आना	संकट में पिछले सुख की याद आना

68. 'परित्यक्ता' शब्द इनमें से किस लोकोक्ति के लिए सटीक अर्थ है–

(a) जिस स्त्री के पुत्र, पति हों।
(b) वह स्त्री जिसका पति मर गया हो।
(c) वह स्त्री जो पति द्वारा छोड़ दी गयी हो।
(d) वह स्त्री जो पर पुरुष से प्रेम करती हो।

उत्तर (c) : 'परित्यक्ता' शब्द 'वह स्त्री जो पति द्वारा छोड़ दी गयी हो' वाक्यांश के लिए प्रयुक्त होता है।
निम्नलिखित वाक्यांशों के एक शब्द इस प्रकार होंगे–
- वह स्त्री जिसका पति मर गया हो – विधवा
- वह स्त्री जो पर पुरुष से प्रेम करती हो – परकीया

69. इनमें से भाववाचक संज्ञा हैं–

(a) अमीर (b) गरीब
(c) भिक्षुक (d) अमीरी

उत्तर (d) : इनमें से भाववाचक संज्ञा– 'अमीरी' है।
भाववाचक संज्ञा– जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति या वस्तु के गुण या धर्म, दशा अथवा व्यापार का बोध होता है उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे– बुढ़ापा, लम्बाई, मिठास, नम्रता, निजत्व आदि। शेष विकल्प अमीर, गरीब एवं भिक्षुक जातिवाचक संज्ञा हैं।
भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय में प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बनता है। जैसे–
जातिवाचक संज्ञा से– बूढ़ा-बुढ़ापा, मित्र–मित्रता, पंडित-पंडिताई, दास–दासत्व इत्यादि।
विशेषण से– कठोर-कठोरता, चतुर-चतुराई, गर्म-गर्मी इत्यादि।
क्रिया से– सजाना-सजावट, चतुर-चतुराई, बहना-बहाव इत्यादि।
सर्वनाम से– मम–ममता या ममत्व, अपना अपनापन या अपनत्व इत्यादि।
अव्यय से– दूर-दूरी, निकट-नैकट्य, समीप-सामीप्य इत्यादि।

70. 'दूतवाक्यम्' कृति के रचनाकार हैं–

(a) कालिदास (b) भास
(c) भवभूति (d) भारवि

उत्तर (b) : 'दूतवाक्यम्' कृति के रचनाकार भास हैं।
→ भास के कुल तेरह (13) नाटक हैं। जिसमें पाँच (5) एकांकी नाटक हैं।

नाटक–
- 1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण (4 अंक)
- 2. स्वप्नवासवदत्तम् (6 अंक)
- 3. पंचरात्र (3 अंक)
- 4. बालचरित (5 अंक)
- 5. प्रतिमा नाटक (7 अंक)
- 6. अभिषेक नाटक (6 अंक)
- 7. अविमारक (6 अंक)
- 8. चारूदत्त (4 अंक) - (अपूर्ण)

एकांकी–
- 9. ऊरूभंग (एकांकी)
- 10. दूतवाक्यम् (एकांकी)
- 11. दूत-घटोत्कच (एकांकी)
- 12. कर्णभार (एकांकी)
- 13. मध्यमव्यायोग (एकांकी)

71. 'काव्येषु नाटकं रम्यं' –यह कथन इनमें से किस कृति के संदर्भ में है?

(a) अभिज्ञान शाकुन्तलम् (b) मालविकाग्निमित्रम्
(c) विक्रमोर्वशीयम् (d) ऋतुसंहार

उत्तर (a) : 'काव्येषु नाटकं रम्यं'– यह कथन कालिदास के नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के संदर्भ में है। यह कालिदास का सर्वश्रेष्ठ नाटक है। इसमें सात अंकों में दुष्यंत तथा शकुन्तला के मिलन, वियोग तथा पुनर्मिलन का वर्णन है।
कालिदास की 7 रचनाएँ प्रसिद्ध हैं–
1. ऋतु संहार – (6 सर्ग) – (गीतिकाव्य)
2. मेघदूतम् – (गीतिकाव्य)
3. कुमार संभवम् – (17 सर्ग) – (महाकाव्य)–(शृंगार रस प्रधान)
4. रघुवंशम् – (19 सर्ग) – (महाकाव्य)
5. मालविकाग्निमित्रम् – (5 अंक) (नाटक)
6. विक्रमोर्वशीयम् – (5 अंक) (नाटक)
7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – (7 अंक) (नाटक)

72. सूची–एक के रचनाकारों को सूची–दो में लिखी उनकी कृतियों से समुचित मेल करके दिए गए कूट से सही विकल्प का चयन कीजिए–

सूची–एक (रचनाकार)	**सूची–दो (कृतियाँ)**
(क) मम्मट	(अ) साहित्यदर्पण
(ख) विश्वनाथ	(ब) चन्द्रालोक
(ग) जयदेव	(स) काव्यप्रकाश
(घ) दण्डी	(द) काव्यादर्श

कूट–

	क	**ख**	**ग**	**घ**
(a)	स	ब	द	अ
(b)	ब	अ	स	द
(c)	स	अ	ब	द
(d)	अ	द	ब	स

उत्तर (c) : सूची–एक के रचनाकारों को सूची दो में लिखी उनकी कृतियों का सही सुमेलन इस प्रकार होगा–

सूची–एक (रचनाकार)	**सूची–दो (कृतियाँ)**
मम्मट	काव्यप्रकाश
विश्वनाथ	साहित्यदर्पण
जयदेव	चन्द्रालोक
दण्डी	काव्यादर्श

73. निम्नलिखित दो कथनों में एक स्थापना (A) है और दूसरा तर्क (R) है। कोड में दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए।

स्थापना (Assertion) A : भरत का 'नाट्यशास्त्र' विविध ललित कलाओं का एकत्र सम्मेलन है।
तर्क (Reason) R : क्योंकि यह ग्रन्थ भाषाशास्त्र, अलंकारशास्त्र तथा नाट्यशास्त्र कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

(a) (A) सही है और (R) गलत है।
(b) (A) गलत है और (R) सही है
(c) (A) और (R) दोनों सही हैं।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

उत्तर (c) : स्थापना (Assertion) A : भरत का 'नाट्यशास्त्र' विविध ललित कलाओं का एकत्र सम्मेलन है।

तर्क (Reason) R : क्योंकि यह ग्रन्थ भाषाशास्त्र, अलंकारशास्त्र तथा नाट्यशास्त्र कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।
अतः स्थापना (A) और तर्क (R) दोनों सही है।
⇒ भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में प्रत्यभिज्ञा दर्शन की छाप है। प्रत्यभिज्ञा दर्शन में स्वीकृत 36 मूल तत्त्वों के प्रतीक स्वरूप नाट्यशास्त्र में 36 अध्याय हैं।

74. महाकवि कालिदास–विरचित 'कुमारसंभव' में किस रस की प्रमुखता है?
(a) वीर रस (b) रौद्र रस
(c) करुण रस (d) शृंगार रस

उत्तर (d) : महाकवि कालिदास विरचित 'कुमारसंभव' में शृंगार रस की प्रमुखता है।
कुमार संभवम् (17 सर्ग)– इस 'महाकाव्य' में हिमालय की पुत्री पार्वती द्वारा घोर तपस्या के फलस्वरूप वर रूप में शिव को प्राप्त करने तथा उनसे कार्तिकेय की उत्पत्ति का वर्णन है। यह कालिदास का प्रथम महाकाव्य है।
कालिदास कृत रचनाएँ–
ऋतुसंहार (गीतिकाव्य), मेघदूतम् (गीतिकाव्य), कुमार संभवम् (17सर्ग,महाकाव्य),रघुवंशम् (19सर्ग,महाकाव्य), मालविकाग्निमित्रम् (5अंक,नाटक), विक्रमोर्वशीयम् (5अंक, नाटक) अभिज्ञानशकुन्तलम् (7अंक, नाटक)।

75. निम्नलिखित शब्द रूपों और उनकी विभक्तियों को सुमेलित कर दिए गए कूट से सही विकल्प का चयन कीजिए–

शब्दरूप	**विभक्ति**
(क) आत्मनि	(अ) चतुर्थी एकवचन
(ख) सर्वस्मै	(ब) पंचमी बहुवचन
(ग) युष्मत्	(स) सप्तमी एकवचन
(घ) अस्माभिः	(द) तृतीया बहुवचन

कूट–

	क	ख	ग	घ
(a)	ब	स	अ	द
(b)	स	अ	ब	द
(c)	द	स	ब	अ
(d)	स	द	अ	ब

उत्तर (b) : निम्नलिखित शब्द रूपों और उनकी विभक्तियों का सही सुमेलन इस प्रकार होगा–

शब्द रूप		**विभक्ति**
आत्मनि	–	सप्तमी एकवचन
सर्वस्मै	–	चतुर्थी एकवचन
युष्मत्	–	पंचमी बहुवचन
अस्माभिः	–	तृतीया बहुवचन

76. निम्नलिखित में से किस शब्द में पंचमी तत्पुरुष समास है?
(a) देशहितम् (b) स्वर्गपतितः
(c) ग्रामगतः (d) वाक्पटुः

उत्तर (b) : निम्न में से स्वर्गपतितः शब्द में पंचमी तत्पुरुष समास है। देशहितम् में सम्प्रदान तत्पुरुष समास है।
ग्रामगतः में कर्म तत्पुरुष समास है।
वाक्पटुः में अधिकरण तत्पुरुष समास है।

77. 'अन्वयः' शब्द का संधि – विच्छेद होगा–
(a) अन् + वयः
(b) अन + अयः
(c) अनु + अयः
(d) अनु + वयः

उत्तर (c) : 'अन्वयः' शब्द का संधि-विच्छेद 'अनु + अयः' होगा यदि इ, ई, उ, ऊ और ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए, तो इनका परिवर्तन क्रमशः 'य्', 'व्' और 'र्' में हो तो वहाँ यण् स्वर सन्धि होता है। **जैसे–**यदि + अपिः = यद्यपिः, अनु + अयः – अन्वयः।

78. निम्नलिखित में से किस शब्द में तद्धित प्रत्यय का प्रयोग हुआ है?
(a) पूज्य (b) करणीय
(c) पाठक (d) वासुदेव

उत्तर (d) : निम्न में से 'वासुदेव' शब्द में तद्धित प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। पूज्य–यहाँ पर मूल शब्द 'पूज्' एक क्रिया है जिसमें कृत प्रत्यय 'य' जुड़ने से बना शब्द 'पूज्य' कृदन्त शब्द कहा जाएगा। पाठक शब्द के अन्त में 'अक' प्रत्यय लगा है जो कि 'कृत प्रत्यय' है। पाठक में 'पठ्' धातु में 'अक' प्रत्यय लगाकर पाठक शब्द बना है। करणीय में 'ईय' प्रत्यय लगाकर करणीय शब्द बना है।
तद्धित प्रत्यय– संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में लगने वाले प्रत्यय को 'तद्धित' प्रत्यय कहा जाता है और उनके मेल से बने शब्द को 'तद्धितान्त'।
कृदन्त प्रत्यय– कृदन्त प्रत्यय धातु के साथ जुड़ते हैं। वे शब्द जो धातुओं के अंत में जुड़कर नए शब्दों की रचना करते हैं, कृदन्त प्रत्यय कहलाते हैं। **जैसे–** लड़ + आई (धातु + प्रत्यय) = लड़ाई।

79. 'गंगा हिमालय से निकलती है।' –इस वाक्य का संस्कृत में सही अनुवाद है–
(a) गंगा हिमालयात् प्रभवति।
(b) गंगा हिमालयो प्रभवति।
(c) गंगा हिमालयम् प्रभवति।
(d) गंगा हिमालयेण प्रभवति।

उत्तर (a) : 'गंगा हिमालय से निकलती है।' इस वाक्य का संस्कृत में सही अनुवाद है– गंगा हिमालयात् प्रभवति।

80. 'पा' धातु लट् लकार उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है–
(a) पिबन्ति (b) पिबथ
(c) पिबथः (d) पिबामः

उत्तर (d) : 'पा' धातु लट् लकार उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है– पिबामः।
'पा' धातु लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः